Indian J. Soc. & Pol. 05(01):155-158:2018 **ISSN: 2348-0084(PRINT)**
UGC List No. 47956 **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

भारत छोड़ो आन्दोलन में जनपद बलिया की भूमिका : एक भू–राजनीतिक विश्लेषण

आलोक कुमार श्रीवास्तव[1a]
[a]प्रवक्ता भूगोल, अखण्डाननद जनता इण्टर कॉलेज, गरौठा, झाँसी, उ0प्र0 भारत

ABSTRACT

जनपद बलिया में राजनीतिक एवं भौगोलिक तथ्यों का अद्भुत सम्मिश्रण हुआ है। यहाँ की राजनीति भौगोलिक पृष्ठभूमि के रंगमंच पर पुष्पित एवं पल्लवित हुई है। यहां के ऐतिहासिक–राजनीतिक घटनाक्रमों का प्रत्यक्ष सम्बन्ध बलिया निवासियों के क्रान्तिकारी स्वभाव, प्रकृति एवं विचारधारा से है जो बलिया के भौगोलिक परिस्थितियों के गर्भ से उत्पन्न हुआ है। फलस्वरूप बलिया में 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में अपने स्तित्व की ऐसी अविस्मरणीय गाथा को प्रतिस्थापित किया जो भारतीय इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गया। प्रस्तुत अध्ययन में इन्ही तथ्यों का विश्लेषण किया गया है।

KEY WORDS: *शक्ति राजनीति का खेल, मंत्र, बहिष्कार, उद्वेलित, इन्कलाब*

प्रस्तावना

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन दीर्घावधि की परिस्थितियों का परिणाम था। ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा 1750 ई0 में भारत में प्रारम्भ किया गया शक्ति राजनीति का खेल (आजादपृ031) लगभग 200 वर्षो के शासन में राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक और सैनिक क्षेत्रों में ऐसी परिस्थितियों का सृजन कर दिया जिससे पीड़ित एवं शोषित इतना प्रबल विरोधी बन गये कि 1857 में प्रथम शहीद मंगल पाण्डे द्वारा सुलगाई गई क्रान्ति की चिंगारी का अनेक परिस्थितियों से संघर्ष करते हुये 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन के रूप में अद्भुत प्रस्फोट हुआ जिसका घटनाक्रम इस प्रकार रहा।

घटनाक्रम

7 और 8 अगस्त, 1942 ई0 को बम्बई में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने महात्मा गांधी की अध्यक्षता में 'अंग्रेजों भारत छोडो' का प्रस्ताव पास किया और अंग्रेजों के विरूद्ध निर्णायक संघर्ष छेड़ने का निर्णय लिया तथा गांधी जी ने इसे अपने जीवन का सबसे बड़ा आन्दोलन मानते हुए लगभग 70 मिनट तक भाषण दिया, जिसमें उन्होंने कहा कि, ''यह एक छोटा सा मंत्र है जो तुम्हें देता हूँ। तुम इसे अपने हृदय पर लिख लो ताकि तुम्हारी हर सांस में प्रकाशित हो। यह मंत्र है– 'हम करेंगे या मरेंगे।' हम या तो भारत को आजाद करेंगे या उसकी कोशिश में मर जायेंगे। हम अपनी गुलामी कायम रखने के लिए जिन्दा नहीं रहेंगे। कांग्रेस का हर सदस्य चाहे वह स्त्री हो या पुरूष, संघर्ष में इस अटल संकल्प से शामिल होगा कि उसे देश को गुलामी में जकड़ा देखने के लिए जिन्दा नहीं रहना है। यही तुम्हारी शपथ है। कोई भी काम छिपाकर नहीं किया जायेगा। यह खुला विद्रोह है, इस संघर्ष में छिपाव पाप हैं। स्वाधीन व्यक्ति को छिपकर काम नहीं करना चाहिए। आजादी कल नहीं आज आनी है। इसलिए मैनें कांग्रेस से वादा किया है कि हम करेंगे या मरेगें।(ब्रेल्सफोर्डपृ0106) उन्होंने यह भी कहा कि आज से हर देशवासी अपने को स्वतंत्र माने तथा अपना मार्गदर्शक स्वयं बने।'' इस आन्दोलन में बलिया जनपद ने अभूतपूर्व एवं ऐतिहासिक सफलता प्राप्त की। फलस्वरूप बलिया में चित्तू पाण्डे के नेतृत्व में 20 अगस्त, 1942 ई0 को स्वराज्य सरकार की स्थापना हुई और सभी स्थानों व सरकारी भवनों पर तिरंगा झण्डा लहरा उठा। 9 अगस्त से 21 अगस्त, 1942 ई0 तक के 13 दिनों में प्रतिदिन बलिया की माटी में एक नये इतिहास का सृजन हुआ।(दैनिक जागरण 8 अगस्त2006)

9 अगस्त को प्रातः ही स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों राधा मोहन सिंह, राधा गोविन्द सिंह, परमात्मा नन्द व रामनरेश सिंह की गिरफ्तारी के पश्चात् 15 वर्षीय साहसी कार्यकर्ता सरयू प्रसाद ने सेंसर के बाद भी एक हिन्दी समाचार पत्र लेकर उमाशंकर सिंह से सम्पर्क किया तथा भोंपू बजाकर गांधीजी सहित अन्य नेताओं की गिरफ्तारी की जानकारी दी और 'करो या मरो' का संदेश भी प्रचारित किया। **10 अगस्त** को प्रातः 8 बजे बलिया शहर के ओक्टेनगंज पुलिस चौकी पर 'अंग्रेजों छोड़ो' क्रांति का शंखनाद किया गया तथा शहर में छात्रों ने एक जुलूस निकाला, जिसका संचालन उमा शंकर, महेश प्रसाद, अमरनाथ, सूरज प्रसाद, अवध किशोर तथा श्रीकान्त ने किया। जुलूस मालगोदाम व टाउनस्कूल होते हुए कचहरी की ओर गया जहाँ क्रांतिकारियों के गांधी जी, भारत माता तथा इन्कलाब जिन्दाबाद के नारों से वातावरण गुंजित हो गया। चाँदपुर निवासी यमुना सिंह ने अपने सहयोगियों के साथ सहतवार थाना पर धावा बोल दिया। दारोगा सेफ्टी हैदर से बन्दूक छीन लिया। अन्य पुलिस कर्मियों ने भी तंग आकर इन्हें बन्दूक सौंप दिया। यह समाचार सुनकर कई थानों पर छात्रों ने धावा बोल दिया।

11 अगस्त को बलिया नगर में 20 हजार से अधिक नागरिकों व छात्रों ने विशाल जुलूस निकाला, जिसमें जिला कांग्रेस

1: Corresponding Author

के मुख्य वक्ता राम अनन्त पाण्डेय ने पौने दो घंटे के भाषण में कहा कि 'अहिंसात्मक रहते हुए भी सभी कार्य करने हैं, जिनसे यातायात भंग हो, प्रशासन ठप हो, जिले के समस्त प्रशासनिक केन्द्रों पर जनता का अधिकार तथा कचहरियों का पूर्ण बहिष्कार हो, साथ ही क्रांति को सफल बनाने के लिए बाजार में पूर्णरूपेण बन्दी किये जाने का आह्वान किया। सायं 3 बजे राम अनन्त पाण्डेय प्रशासन द्वारा गिरफ्तार कर लिए गये। रानीगंज में काली प्रसाद, रामदयाल सिंह व मदन सिंह धारा 34,38 आई0 पी0 सी0 में गिरफ्तार हुए, परिणामस्वरूप व्यापक जुलूस निकला और विरोधसभायें हुई। सिकन्दरपुर के थानेदार ने खेजुरी मण्डल कांग्रेस कमेटी की तलाशी लेकर कागज जब्त कर ताला लगा दिया। साथ ही सिवानकला के राधाकृष्ण प्रसाद को भी धारा 34–38 आई0पी0सी0 में गिरफ्तार कर जेल भेज दिया, जिसने आन्दोलन को भड़का दिया।

12 अगस्त को अदालतों के बहिष्कार व बाजार बंदी की तैयारियां चल ही रही थी कि भारत सचिव एल0 एस0 एमरी के भाषण ने आग में घी का काम किया।(आज का इतिहास, दैनिक जागरण,12 अगस्त 2006) एमरी का अखबारों में वक्तव्य छपा कि 'गांधी व उनके सहयोगियों' को गिरफ्तार कर जनता से अलग कर दिया गया है' जिससे कांग्रेसी, समाजवादी तथा क्रांतिकारी युवा व छात्र उद्वेलित हो उठे। इन्हें नियंत्रित करने हेतु लगभग 11.00 बजे हाकिम परगना मु0 ओबैस के नेतृत्व में लगभग 100 सशस्त्र पुलिस वालों ने जुलूस को आगे न बढने का आदेश दिया तथा इन्कार करने पर उन्हें निर्दयता पूर्वक पीटा और छात्रों के घर धावा बोल कर 30 छात्रों को गिरफ्तार कर कोतवाली लाया और उन्हें यातनाएं दी, जिनमें श्री राम सुभग सिंह, राम चन्द्र तिवारी, रमाकान्त सिंह, अवधेश तिवारी, केशव सिंह, परमानन्द पाण्डेय और योगेन्द्र नाथ मिश्र सहित कलक्टर जे0 निगम के पुत्र भी थे इसके साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों के बैरिया व लालगंज में धूपनारायण सिंह, सुदर्शन सिंह, प्रभुनाथ तिवारी के नेतृत्व में जुलूस निकला व सभाएँ हुईं। आन्दोलन में नया मोड़ तब आया जब बनारस, इलाहाबाद व लखनऊ में पढ़ने वाले इस अंचल के छात्र पढ़ाई छोड़कर बलिया में आन्दोलन का नेतृत्व करने के लिए घर वापस आ गये। सभी प्रकार की संचार व्यवस्थाओं को छिन्न–भिन्न कर ब्रिटिश प्रशासनिक केन्द्रों पर पूर्ण अधिकार कर ब्रिटिश नौकरशाही का बिस्तरा गोल कर देना ही आन्दोलन का मुख्य लक्ष्य बन गया। अतः इन छात्रों ने यातायात साधनों को नष्ट करना, टेलीग्राफ व टेलीफोन तारों को काटना, सरकारी भवनों की क्षति, थानों व कचहरियों पर अधिकार जैसे कार्य प्रारम्भ कर दिये। इनमें प्रमुख छात्रनेता पारस नाथ सिंह और बृज किशोर सिंह, केदार नाथ सिंह आदि थे। मिर्जापुर के अहरौरा रेलवे स्टेशन के लूट–फूँक अभियान में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के जिस छात्र दल ने भाग लिया उसमें बलिया के नगीना सिंह, शिव हरी उपाध्याय तथा शिवकुमार राय (उजियार) सम्मिलित थे।

13 अगस्त को जनान्दोलन की दहकती आग में महिलायें भी कूद पड़ीं। अज्ञातवास साधु वेशधारी कांग्रेस जनों के संरक्षण तथा जानकी देवी के नेतृत्व में जुलूस निकला जो चौक आया, जहाँ बाबा के भाषणोपरान्त जुलूस कांग्रेस भवन होते हुए सिविल जज के पास पहुँचा, उनसे कुर्सी छोड़कर आजादी की लड़ाई में शामिल होने को कहा। परन्तु उन्होंने असमर्थता व्यक्त की। जिस पर महिलाओं ने क्रुद्ध होकर उन्हें **'अपनी चूड़ियां देते हुए कहा कि इसे आप ही लोग पहनकर घरों में बैठें। हम लोग ही देश को आजाद करा लेंगे'** । इस पर जज घबराकर कुर्सी छोड़कर भाग गया। इसके बाद महिलाओं ने जजी कचहरी पर राष्ट्रीय ध्वज फहरा दिया और जानकी देवी जज की कुर्सी पर बैठ गईं तथा महिलाएं **''इन्कलाब जिन्दाबाद''** व अन्य नारे लगाने लगीं। कांग्रेस भवन पर कब्जा कर स्वंय ताला तोड़कर सभी कागजात, फाइलें व रजिस्टर सुरक्षित स्थान पर छिपा दिया। इस प्रकार 13 अगस्त क्रांतिकारी महिलाओं का दिन सिद्ध हुआ।(वही, 13 अगस्त 2006)

इसके अतिरिक्त बेल्थरारोड के डम्बर बाबा मेले में स्टेशन पर धावा बोलने का आह्वान किया गया। खेजरी मण्डल कांग्रेस कार्यालय का ताला तोड़कर राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया जिसमें नन्दलाल, केदार राम व इन्द्रजीत तिवारी सहित 9 लोगों की गिरफ्तारी हुई। रेवती में स्कूली छात्रों द्वारा तार काटा गया व रेल की पटरियाँ उखाड़ी गयी तथा बांसडीह में कांग्रेस रक्षक दल द्वारा थाने के सिपाही को रिश्वत लेने के जुल्म में नेता वृन्दा सिंह ने पकड़कर 24 घंटे बन्द रखने की सजा दी।

14 अगस्त को छात्रायें भी जनान्दोलन में कूद पड़ी। इस दिन प्रातः 8 बजे बलिया स्टेशन पर इलाहाबाद से एक ट्रेन आयी, जिसमें क्रांतिकारी छात्रों के साथ छात्राएं भी थीं। ट्रेन के क्रांतिकारी नेताओं ने नारे लगाते हुए कहा कि यहाँ के लोग कायरता दिखा रहे हैं। हम 'आजाद हिन्द ट्रेन' लेकर आये हैं। स्टेशन पर सन्नाटा देखकर छात्राओं ने पुरूषों को ललकारते हुए चूड़ियां पहनने को कहा। फिर क्या था? पुरूषों में उत्तेजना फैल गईं। उन लोगों ने स्टेशन और मालगोदाम को लूट कर फूँका तथा दो सिपाहियों को पीटा। फिर उत्तेजित भीड़ ने रात भर जाग कर डाक टिकट, लिफाफा, पोस्ट कार्ड एवं नकद रूपये आदि फूँक दिये, इसमें पारस नाथ मिश्र, देवनाथ उपाध्याय, डॉ0 धर्मचरण लाल, सरयू चमार, सुदेश्वर लाल व ऋषि तिवारी आदि प्रमुख थे। इसी दिन बैरिया में भी क्रांतिकारी व्यस्त थे। बांसडीह मंडल कार्यालय पुलिस द्वारा अधिकृत था, उस पर नायब थानेदार जाफर से कहासुनी होने से स्थिति तनावपूर्ण हो गयी। किशोर निवासी राम नगीना राय के नेतृत्व में जुलूस जब मिडिल स्कूल सिकन्दर पुर पहुँचा तो अध्यापकों के विरोध के बावजूद स्कूल के बच्चे भी जुलूस में शामिल हो गयें, जिस पर क्रुद्ध होकर थानेदार अशफाक घोड़े पर सवार होकर नन्हे मुन्नों को रौदनें, लगा जिससे अनेक बच्चे घायल हो गये। राम नगीना राय को गिरफ्तार कर लिया गया। कटरिया के जंगल में क्रांति का जयघोष करते हुए ब्रिटिश

शासन की समाप्ति के उद्देश्य से ध्वंसात्मक रणनीति तय की गयी जिसमें चन्द्रकांत मिश्र, त्रिवेणी सिंह, सत्यनारायण मिश्र व राम गोविन्द लाल आदि प्रमुख थे।(वही 14 अगस्त 2006)

15 अगस्त को सबसे प्रशंसनीय कार्य रेवती क्षेत्र के लोगों ने किया। यहाँ 'करो या मरो' के नारे के कारण शासन स्वयं को कमजोर व निराश्रित समझने लगा। जिसका लाभ उठाकर रेवती में श्री बच्चा तिवारी, सूरज प्रताप सिंह, रघुराई राम, उमाशंकर लाल आदि द्वारा अंग्रेजी प्रशासनिक व्यवस्था के स्थान पर पंचायती व्यवस्था कायम की गयी जो निर्विवाद रूप से 10 दिनों तक चलती रही। सहतवार थाने के सिपाहियों को भगा दिया गया। कागजों में आगजनी, रेल पटरियों को उखाड़ना व यातायात बाधित करने कार्य पूरा किया गया।

बलिया शहर में 200 छात्रों ने स्टेशन, डाकघर व मालगोदाम को लूटकर फूँक दिया तथा कांग्रेस भवन को पुलिस कब्जे से मुक्त कराया। बहुआरा के बजरंग आश्रम पर प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे 300 कांग्रेस स्वयं सेवकों व 15000 जनसमूह ने भूपनारायण सिंह, रामजन्म पाण्डेय व अयोध्या सिंह के नेतृत्व में बैरिया थाने का घेराव किया तो वहाँ के थानेदार काजिम हुसैन ने भीड़ को देखते ही आत्म समर्पण करते हुए बैरिया थाना छोड़ने के लिए विनम्रता पूर्वक दो दिन का समय मांगा, जिससे नेतागण उसकी चिकनी चुपड़ी बातों में आकर थाने पर कब्जा नहीं किये।

16 अगस्त को बरसात के पानी से लबालब भरा हुआ गड़हा क्षेत्र भी अपने आप को नहीं रोक पाया। कोटवां, नरायनपुर, सोहांव, लक्ष्मणपुर, नरहीं व चौरा गाँव से क्रांतिकारियों की भीड़ ने चितबड़ा गाँव रेलवे स्टेशन पर धावा बोल दिया। रात में ही तार काटकर सिग्नल नष्ट कर दिये गये व प्रातः ही नरहीं थाने पर तिरंगा झण्डा फहरा दिया गया। क्रांतिकारियों में राम नगीना राय, राधाकृष्ण गुप्त, लक्ष्मी शंकर द्विवेदी व जनार्दन तिवारी आदि प्रमुख थे। चितबड़ा गाँव से लौटती भीड़ ने संध्या समय नरहीं थाने को अपना लक्ष्य बनाया। थानेदार सुन्दर सिंह को पहले से ही इसकी आशंका थी और उसने देहात से अनेक बन्दूकें व 200–250 लठैतों को थाने में एकत्र कर रखा था, परन्तु विशाल विप्लवी भीड़ को देखते ही सुन्दर सिंह ने तुरन्त आत्म समर्पण कर दिया और अपने ही हाथों से राष्ट्रीय झण्डा फहराकर उसका अभिवादन किया। भीड़ ने नरहीं डाकघर पर भी कब्जा कर लिया। इस भीड़ के नेतृत्वकर्त्ता पुराने कांग्रेसी ओंकार नन्द, जंग बहादुर सिंह, शिव नारायण सिंह तथा लक्ष्मी शंकर त्रिवेदी (नरहीं) थे। बलिया स्टेशन पर बनारस से आ रही ट्रेन का नाम 'आजाद ट्रेन' रखकर गंगा प्रसाद गुप्त द्वारा झण्डा फहरा दिया गया। धारा 144 तोड़ने के जुर्म में जानकी देवी, पार्वती देवी, मानकी, शान्ति व कल्याणी देवी आदि क्रांतिकारी महिलाओं को बिना खाना–पानी 24 घंटे कमरे में बन्द रखा गया।(वही, 16 अगस्त 2006)

17 अगस्त को लगभग 15000 व्यक्तियों के जनसमूह ने रसड़ा रेलवे स्टेशन का ताला तोड़कर उसमें रखे सामानों को लूटा व आग लगा दी। फिर रसड़ा डाकघर को आग के हवाले करके तहसील पर भी धावा बोल दिया। तहसील व थाने पर तहसीलदार ने स्वयं गांधी टोपी पहनकर झंडा फहराया। इन कार्यों में प्रमुखतः हाजिर बख्श अन्सारी, मुहम्मद अयूब, हरगोविन्द सिंह, सीता राम, हरचरण लाल तथा गोरख सिंह आदि क्रांतिकारी शामिल थे। जब आन्दोलनकारियों की भीड़ इम्पीरियल बैंक पर पहुँची तो पुलिस द्वारा छत से क्रांतिकारियों के ऊपर ईंट पत्थर व तेजाब फेंका गया व बन्दूक से गोलियाँ चलाई गयी जिसमें 6 लोग शहीद व 50 लोग घायल हुए, जिसमें सुल्तानपुर के श्री हरि, विश्वनाथ व श्रीकृष्ण मिश्र भी थे।(वही17 अगस्त 2006) सहतवार में श्रीपति कुंवर, जमुना राय व इन्द्रदेव प्रसाद गुप्त के नेतृत्व में क्रांतिकारियों ने थानेदार को आत्मसमर्पण हेतु विवश कर दिया तत्पश्चात् थाने को फूंक दिया। डॉकघर, स्टेशन व मालगोदाम में भी आग लगा दी गई जिससे सहतवार टाउन एरिया सहित पूरे क्षेत्र पर स्वशासन स्थापित हो गया जो 10 दिनों तक कायम रहा।

18 अगस्त को बैरिया थाने पर 25 हजार की भीड़ थी, जिसमें 50 महिलाएँ भी थी जो (धनेसरी देवी, तेतरी देवी, राम झरिया आदि) जुलूस में क्रांतिकारी चुनौतियाँ दे रही थीं। इस जुलूस का नेतृत्व भूप नारायण सिंह, परशुराम सिंह, बलदेव सिंह व राजकुमार मिश्र आदि कर रहे थे। 15 अगस्त को फहराये गये ध्वज को थानेदार कासिम हुसैन ने हटवा दिया था अतः क्रांतिकारी पुनः ध्वज लेकर थाने पहुंचे। भीड़ की उग्रता को देखकर थानेदार ने गोली चलाने का आदेश दे दिया, जिससे क्रांतिकारी गोली का शिकार होकर गिरते जा रहे थे फिर भी क्रांतिकारियों का हौसला कम नहीं हुआ, नारायणगढ़ का एक 25 वर्षीय नौजवान 'कौशल कुमार सिंह' झण्डा लेकर थाने की छत पर चढ़ गया। उसने ज्यों ही तिरंगा ध्वज फहराने की कोशिश की तब एक सिपाही महमूद खाँ ने गोली मार दी। भारत माँ का वह वीर सपूत कौशल कुमार सिंह तिरंगा लिये हुए शहीद हो गया। यह गोली काण्ड 1.30 से 6.00 बजे सायं तक चलता रहा, जिसमें 28 व्यक्ति शहीद और 100 व्यक्ति घायल हुए।

19 अगस्त को क्रांतिकारियों का दल बांसडीह से अपनी विजय पताका लिये हुए बलिया शहर में प्रवेश किया व तत्कालीन जिलाधिकारी जे0 निगम तथा अन्य अधिकारियों को घेर लिया बनारस के कमिश्नर द्वारा सहायता भेजने के सारे प्रयास असफल हो चुके थे। बलिया के सम्पूर्ण क्षेत्र में अंग्रेजी प्रशासन पंगु बन गया था। निगम के हृदय में, जो मूलतः भारतीय था, कहीं न कहीं देशभक्ति का भाव अवश्य रहा होगा, इसीलिए उसने क्रांतिकारियों का सहयोग किया। सर्वप्रथम उसने 9 लाख रूपयों में आग लगवा दी, उसके बाद चित्तू पाण्डे से वार्ता कर जेल का फॉटक खुलवा दिया, फिर सभी क्रांतिकारी सैनिक बाहर निकले तो इन्कलाब जिन्दाबाद के नारे से उनका स्वागत हुआ। आजादी की लड़ाई

निर्णायक दौर में पहुँच चुकी थी। डिप्टी कलेक्टर ने पुलिस लाइन में क्रांतिकारियों पर गोली चलाने का आदेश दिया लेकिन भय वश पुलिस ने कुछ नहीं किया। टाउन हाल में महानन्द मिश्र, राम लक्ष्मण चौबे, नगीना आदि ने उग्र कार्यक्रमों की मांग की। जनता की आवाज आयी कि ''चित्तू पाण्डे को बुलाओं'' चित्तू पाण्डे मंच पर आसीन हुए और अपने भाषण में कहा, **''रउवा सभे जवन कुछ कईली, ओकरा खातिर हम रउवा सबके हिरदय से बधाई दे तानी। हम त रउवा सबके सेवक हई। अपना ओरि से जेल से छूटे खातिर कवनों जतन ना कइली हॉ। हमरा के त इही ना मालूम बा की ई कुल कइसे भईल ह। ई सब रउरे क विजय बा, हमार एमें कुछ नइखे। ए आन्दोलन के रउवें सब नेता बानी, हम ना। जइसन रउवा सब राइ देइब, उहें होई। इहां आज सुराज भईल, एकर माने गांधी जी के राम राज आ गइल। अब अपना इहां जाइके सब शान्ति रखी, सबके रक्षा करी सभे। ईहां से जेवन सनेस जाव ओकरे मुताबिक काम करी सभे।''** इस भाषण से सभी सन्तुष्ट नहीं थे वे जिला प्रशासन की कमजोर स्थिति का लाभ उठाकर अपने अभियान के वास्तविक उद्देश्यों को पूरा कर लेना चाहते थे। इन लोगों को यह देखकर बड़ी निराशा हुई कि ऐसे समय में जब जिला प्रशासन भयभीत स्थिति में सिमटा जा रहा था, कांग्रेस का नेतृत्व वर्ग उस पर निर्णायक प्रहार करने का आदेश देने में हिचकिचा रहा है।(बलिया स्मारिका, 1942)

चित्तू पाण्डे के भाषण से असहमति जताते हुए विरोध स्वरूप क्रांतिकारी वर्ग 'करो या मरो' के निर्धारित लक्ष्य में लगा रहा। ओक्टेनगंज, जापलिगंज की पुलिस चौकी में आग लगा दी गयी। जिसमें बच्चा लाल, सरयू प्रसाद, विश्वनाथ प्रसाद व श्रीकान्त का योगदान विशेष था। रात्रि में रेलवें स्टेशन, सरकारी बीज गोदाम, शराब की दुकानें तोड़फोड़ कर आग लगा दी गयी। दमनात्मक कार्यवाही के आरोप में डिप्टी कलक्टर मु0 औवेस ने नगीना चौबे को उनके आवास पर पकड़ा तथा बन्दूकें व रिवाल्वर भी ले लीं। डिप्टी कलेक्टर एन0डी0 कक्कड़, मुंसफ सहगल, रेकूटिंग अफसर, गोपाल मिश्र भाग गयें। सभी अधिकारी जनता की कैद में पुलिस लाइन में थे। शासन से सत्ता हस्तान्तरण मात्र औपचारिकता ही रह गयी थी। फलतः अंग्रेजी शासन समाप्त होकर बलिया का स्वतंत्रता दिवस सिद्ध हो गया। इस प्रकार 19 अगस्त, 1942 ई0 को बलिया में स्वतंत्रता का दीपक प्रज्ज्वलित हो उठा।''(आज का इतिहास, दैनिक जागरण, 18 अगस्त 2006)

20 अगस्त अंग्रेजी हुकूमत के पंगु होने के बाद 20 अगस्त को पुनः शिवप्रसाद सिंह की कोठी पर क्रांतिकारियों में विचार विमर्श होने के बाद बलिया में, प्रजातांत्रिक स्वराज्य सरकार की स्थापना हुई, जिसके **प्रथम शासनाध्यक्ष व जिलाधिकारी शेरे बलिया चित्तू पाण्डे** नियुक्त किये गये। तदोपरान्त उन्होंने पंचायत के गठन का आदेश दिया और न्यायपालिका व प्रशासन के सभी कार्य करते हुए विवादों का निपटारा समझौतों द्वारा कराया। आन्दोलन पर समाजवादी प्रभाव दिखाई दिया।

21 अगस्त स्वराज्य सरकार की स्थापना के बाद प्रशासन व्यवस्था शांति व सुचारू रूप से चलता रहा। तत्कालीन जिलाधिकारी निगम ने चित्तू पाण्डे के समझौते का उलंघन कर अकारण गोलियां चलवा दी, जिसमें मालगोदाम तथा बालेश्वर मन्दिर के पास 2 व्यक्ति मारे गये। नारों से गूंजता जनसमूह सिकन्दरपुर थाने पर पहुँचकर राष्ट्रीय झण्डा फहराया। थानेदार ने 2 बन्दूकों सहित वर्दिया भी सौंप दी, थाने की कमान शिवपूजन सिंह ने संभाला। सिकन्दरपुर पुलिस चौकी व बीजभण्डार लूटा गया, जिससे वहाँ अंग्रेजी प्रशासन पूर्णतः समाप्त हो गया। तहसीलदार से खजाने की चाभी लेकर कब्जा करने का प्रयास किया गया, लेकिन फौज के आ जाने से यह कार्य न हो सका। नवानगर पोस्ट ऑफिस को घेरकर छात्रों ने फूंक दिया। हुसेनपुर की गांजा की दुकान, कोथ के मवेशी खाना, पंचायत के कागजात व क्वार्टर आदि जला दिये गये। बुढ़ऊ गाँव में छिपे थानेदार राजदेव सिंह ने बंदूक, रिवाल्वर, कारतूस, हथकड़ी तथा भाले आदि स्वयं दे दिया। नरहीं में डिप्टी साहब की 1 बन्दूक, 14 कारतूस, 1 रिवाल्वर, 36 कारतूस छीनकर सभी सामानों को कब्जे में ले लिया तथा कार में आग लगा दी गई। वे भागकर एक महिला के यहाँ शरण लिये।(वही)

9 अगस्त, 1942 ई0 से 21 अगस्त, 1942 ई0 तक के 13 दिनों के अन्दर ही बलिया के स्वतंत्रता प्रेमी, जुझारू व क्रांतिकारी जनता के सुनियोजित, रणनीतिक, सूझ–बूझ एवं त्याग से ऐसा झंझावाती संघर्ष चलाया कि 21 अगस्त तक सम्पूर्ण बलिया जनपद अंग्रेजी दासता के चंगुल से मुक्त रहा।

निष्कर्ष

वैविध्यपूर्ण भौगोलिक दशाओं में जनपद बलिया एक महत्वपूर्ण राजनीतिक शक्ति के रूप में विकसित हुआ। यहां के निवासियों के बागी स्वभाव, प्रकृति एवं सोच भौगोलिक परिस्थितियों के आगोश में इस प्रकार नियंत्रित एवं सधे हुये मार्ग पर अग्रसर हुआ कि अंग्रेजो की शक्ति एवं रणनीति को ध्वंस्त करते हुये 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में ऐसा कीर्तिमान स्थापित कर दिया जो न सिर्फ अंग्रेजो के मद को चूर किया बल्कि भारतीय इतिहास में बलिया स्वयं को इस प्रकार दैदिप्यमान किया कि वह सतत् अक्षुण्ण रहे।

सन्दर्भ

आजाद, मौलानाः 'इण्डिया विन्सफ्रीडम', पृ. 31

सूचना विभाग, उ0प्र0, लखनऊ

ब्रेल्सफोर्ड : 'सब्जेक्ट इण्डिया', पृ. 106

आज का इतिहास, *दैनिक जागरण समाचार पत्र,* वाराणसी,

'बलिया स्मारिका – 1942', सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, बलिया